GYAN MANTHAN
A MULTIDISCIPLINARY RESEARCH JOURNAL

Gyan Manthan

Journal homepage: www.gyanmanthan.org ISSN: **3108-3455**

भारतीय कला, संस्कृति एवं परम्पराओं का संरक्षण: आवश्यकता एवं महत्व

डॉ. अंजुला शर्मा

विभागाध्यक्ष, हिन्दी विभाग, माता गुजरी कॉलेज ऑफ प्रोफेशनल स्टडीज़, इंदौर (म.प्र.)

सार -

भारतीय कला, संस्कृति एवं परम्पराएँ हमारे राष्ट्र की पहचान, सामाजिक चेतना तथा ऐतिहासिक विरासत की आधारशिला हैं| प्राचीन काल से ही भारत विविध भाषाओं, लोककलाओं, रीति-रिवाजों, उत्सवों, संगीत, नृत्य एवं साहित्यिक परम्पराओं का संगम रहा है| ये सांस्कृतिक तत्व केवल मनोरंजन या अभिव्यक्ति के माध्यम नहीं हैं, बल्कि समाज के नैतिक मूल्यों, जीवन-दर्शन तथा सामूहिक एकता को भी सुदृढ़ करते हैं| वर्तमान वैश्वीकरण, आधुनिकीकरण तथा तकनीकी परिवर्तन के दौर में पारम्परिक कला एवं संस्कृति अनेक चुनौतियों का सामना कर रही है| नई पीढ़ी का आधुनिक जीवनशैली की ओर बढ़ता आकर्षण, लोककलाओं के प्रति घटती रुचि तथा पारम्परिक ज्ञान के सीमित हस्तांतरण के कारण अनेक सांस्कृतिक धरोहरें विलुप्त होने की स्थिति में पहुँच रही हैं| यह शोधपत्र कला, संस्कृति एवं परम्पराओं के संरक्षण के महत्व, वर्तमान चुनौतियों तथा उनके समाधान का विश्लेषण प्रस्तुत करता है| अध्ययन में यह स्पष्ट किया गया है कि सांस्कृतिक विरासत का संरक्षण केवल सरकार की जिम्मेदारी नहीं, बल्कि समाज, शैक्षणिक संस्थानों, कलाकारों एवं युवा पीढ़ी की भी समान भागीदारी आवश्यक है| डिजिटल माध्यम, सांस्कृतिक कार्यक्रम, लोककला प्रशिक्षण, दस्तावेजीकरण तथा शिक्षा के माध्यम से इन परम्पराओं को संरक्षित एवं प्रचारित किया जा सकता है| यह शोध इस निष्कर्ष पर पहुँचता है कि कला एवं संस्कृति का संरक्षण राष्ट्र की सांस्कृतिक पहचान, सामाजिक समरसता तथा आने वाली पीढ़ियों के लिए अमूल्य धरोहर को सुरक्षित रखने हेतु अत्यंत आवश्यक है|

Keywords:

भारतीय कला, संस्कृति, परम्पराएँ, सांस्कृतिक विरासत, लोककला, सांस्कृतिक संरक्षण, वैश्वीकरण, आधुनिकीकरण, पारम्परिक ज्ञान, सामाजिक समरसता, डिजिटल माध्यम, सांस्कृतिक पहचान, युवा पीढ़ी, लोकसंस्कृति, शिक्षा एवं संस्कृति।

प्रस्तावना

भारत विश्व की प्राचीनतम सभ्यताओं में से एक है, जिसकी कला, संस्कृति एवं परम्पराएँ उसकी ऐतिहासिक विरासत और सामाजिक पहचान का महत्वपूर्ण आधार हैं| भारतीय संस्कृति अपनी विविधता, सहिष्णुता, आध्यात्मिकता तथा "विविधता में एकता" की भावना के लिए पूरे विश्व में प्रसिद्ध है| यहाँ की लोककलाएँ, शास्त्रीय संगीत, नृत्य, चित्रकला, स्थापत्य कला, त्योहार, भाषा, वेशभूषा तथा पारम्परिक रीति-रिवाज भारतीय समाज की सांस्कृतिक समृद्धि को प्रदर्शित करते हैं| भारतीय संस्कृति

केवल अतीत की धरोहर नहीं है, बल्कि यह वर्तमान सामाजिक जीवन और भविष्य की पीढ़ियों के लिए प्रेरणा का स्रोत भी है| कला और संस्कृति किसी भी राष्ट्र की आत्मा होती हैं| ये समाज को नैतिक मूल्यों, सामाजिक समरसता तथा राष्ट्रीय एकता से जोड़ने का कार्य करती हैं| भारतीय परम्पराएँ परिवार, समाज और मानवता के प्रति सम्मान, सहयोग तथा सह-अस्तित्व की भावना को विकसित करती हैं| प्राचीन काल से चली आ रही सांस्कृतिक परम्पराएँ भारतीय समाज को एक विशिष्ट पहचान प्रदान करती हैं तथा राष्ट्र की गौरवशाली विरासत को सुरक्षित रखने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती हैं|
वर्तमान समय में वैश्वीकरण, पाश्चात्य संस्कृति के बढ़ते प्रभाव, आधुनिक जीवनशैली तथा तकनीकी विकास के कारण भारतीय कला एवं परम्पराएँ अनेक चुनौतियों का सामना कर रही हैं| नई पीढ़ी का पारम्परिक मूल्यों और लोककलाओं से दूर होना सांस्कृतिक संरक्षण के लिए चिंता का विषय बनता जा रहा है| ऐसी स्थिति में भारतीय कला, संस्कृति एवं परम्पराओं का संरक्षण अत्यंत आवश्यक हो गया है| यह शोधपत्र भारतीय कला, संस्कृति एवं परम्पराओं के महत्व, संरक्षण की आवश्यकता तथा उनके संरक्षण हेतु अपनाए जाने वाले उपायों का अध्ययन प्रस्तुत करता है|

भारतीय कला एवं संस्कृति का स्वरूप

भारतीय कला एवं संस्कृति विश्व की सबसे प्राचीन और समृद्ध सांस्कृतिक धरोहरों में से एक मानी जाती है| भारत की सांस्कृतिक पहचान उसकी विविधता, परम्पराओं, आध्यात्मिक मूल्यों तथा कलात्मक अभिव्यक्तियों में निहित है| यहाँ की कला और संस्कृति केवल मनोरंजन का माध्यम नहीं, बल्कि सामाजिक जीवन, धार्मिक आस्था तथा मानवीय मूल्यों की अभिव्यक्ति भी हैं| भारतीय संस्कृति में विभिन्न धर्मों, भाषाओं, रीति-रिवाजों तथा परम्पराओं का सुंदर समन्वय देखने को मिलता है, जो "विविधता में एकता" की भावना को सशक्त बनाता है|

GYAN MANTHAN
A MULITIDISCIPLINARY RESEARCH JOURNAL

(क) भारतीय कला

भारतीय कला का इतिहास अत्यंत प्राचीन एवं गौरवशाली रहा है| इसमें संगीत, नृत्य, चित्रकला, मूर्तिकला, स्थापत्य कला तथा लोककलाओं का विशेष महत्व है| भारतीय शास्त्रीय संगीत, जैसे हिंदुस्तानी एवं कर्नाटक संगीत, विश्वभर में प्रसिद्ध हैं| भरतनाट्यम, कथक, ओडिसी, कुचिपुड़ी तथा कथकली जैसे शास्त्रीय नृत्य भारतीय सांस्कृतिक परम्पराओं को जीवंत बनाए रखते हैं| इसी प्रकार मधुबनी, वारली, पिचवाई तथा कलमकारी जैसी लोकचित्रकलाएँ भारत की क्षेत्रीय सांस्कृतिक पहचान को प्रदर्शित करती हैं|

(ख) भारतीय संस्कृति

भारतीय संस्कृति का स्वरूप अत्यंत व्यापक एवं बहुआयामी है| इसमें भाषा, साहित्य, वेशभूषा, खान-पान, त्योहार, धार्मिक मान्यताएँ तथा सामाजिक रीति-रिवाज सम्मिलित हैं| दीपावली, होली, ईद, क्रिसमस, बैसाखी तथा पोंगल जैसे त्योहार भारतीय समाज में प्रेम, भाईचारे और सामाजिक समरसता का संदेश देते हैं| भारतीय संस्कृति सदैव सत्य, अहिंसा, करुणा, सहिष्णुता तथा सम्मान जैसे नैतिक मूल्यों पर आधारित रही है|

(ग) परम्पराओं का महत्व

भारतीय परम्पराएँ समाज को नैतिक और सांस्कृतिक रूप से सुदृढ़ बनाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती हैं| परिवार में बड़ों का सम्मान, अतिथि सत्कार, सामूहिक उत्सव तथा धार्मिक अनुष्ठान भारतीय परम्पराओं की विशेष पहचान हैं| ये परम्पराएँ सामाजिक एकता, सांस्कृतिक निरंतरता तथा पीढ़ियों के

बीच संबंधों को मजबूत बनाती हैं| भारतीय कला, संस्कृति एवं परम्पराएँ मिलकर राष्ट्र की सांस्कृतिक पहचान को सुरक्षित रखने का कार्य करती हैं|

भारतीय कला, संस्कृति एवं परम्पराओं का महत्व

भारतीय कला, संस्कृति एवं परम्पराएँ राष्ट्र की अमूल्य धरोहर हैं, जो भारत की ऐतिहासिक, सामाजिक एवं आध्यात्मिक पहचान को सशक्त बनाती हैं| ये केवल अतीत की स्मृतियाँ नहीं हैं, बल्कि वर्तमान समाज के नैतिक मूल्यों, जीवन शैली तथा सामाजिक संरचना का महत्वपूर्ण आधार भी हैं| भारतीय संस्कृति ने सदैव मानवता, सह-अस्तित्व, प्रेम, करुणा तथा शांति का संदेश दिया है, जिसके कारण भारत को विश्वभर में विशेष सम्मान प्राप्त है| भारतीय कला एवं संस्कृति राष्ट्रीय पहचान को सुदृढ़ बनाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती हैं| विभिन्न भाषाओं, धर्मों, वेशभूषाओं तथा परम्पराओं के बावजूद भारतीय संस्कृति लोगों को एक सूत्र में बाँधती है| "विविधता में एकता" की भावना भारतीय सांस्कृतिक व्यवस्था की सबसे बड़ी विशेषता है| यह सामाजिक समरसता और राष्ट्रीय एकता को बढ़ावा देती है तथा लोगों में अपने राष्ट्र के प्रति गर्व की भावना उत्पन्न करती है|

कला एवं परम्पराएँ नैतिक और आध्यात्मिक मूल्यों के विकास में भी सहायक होती हैं| भारतीय संस्कृति परिवार, समाज और प्रकृति के प्रति सम्मान की शिक्षा देती है| रामायण, महाभारत, वेद, उपनिषद तथा लोककथाएँ मानव जीवन के आदर्श मूल्यों को प्रस्तुत करती हैं| इसी प्रकार भारतीय संगीत, नृत्य तथा साहित्य मनुष्य के मानसिक और भावनात्मक विकास में योगदान देते हैं| भारतीय कला एवं संस्कृति आर्थिक विकास में भी महत्वपूर्ण योगदान देती हैं| हस्तशिल्प, लोककला, पर्यटन तथा सांस्कृतिक उद्योग लाखों लोगों को रोजगार प्रदान करते हैं| भारत के ऐतिहासिक स्मारक, मंदिर, संग्रहालय तथा सांस्कृतिक उत्सव देश-विदेश के पर्यटकों को आकर्षित करते हैं, जिससे राष्ट्रीय आय में वृद्धि होती है| इसके अतिरिक्त भारतीय योग, आयुर्वेद तथा शास्त्रीय संगीत जैसी परम्पराएँ वैश्विक स्तर पर भारत की सांस्कृतिक पहचान को मजबूत बनाती हैं| नई पीढ़ी के लिए भारतीय संस्कृति प्रेरणा का स्रोत है| यह युवाओं को अपनी जड़ों, परम्पराओं और सांस्कृतिक मूल्यों से जोड़ती है| अतः भारतीय कला, संस्कृति एवं परम्पराओं का महत्व केवल अतीत तक सीमित नहीं है, बल्कि यह वर्तमान और भविष्य दोनों के लिए समान रूप से आवश्यक है|

GYAN MANTHAN
A MULTIDISCIPLINARY RESEARCH JOURNAL

संरक्षण की आवश्यकता

वर्तमान समय में भारतीय कला, संस्कृति एवं परम्पराएँ अनेक सामाजिक, आर्थिक एवं तकनीकी परिवर्तनों के कारण प्रभावित हो रही हैं| वैश्वीकरण और आधुनिकीकरण के दौर में लोगों की जीवनशैली तेजी से बदल रही है, जिसके परिणामस्वरूप पारम्परिक सांस्कृतिक मूल्यों और लोककलाओं के प्रति रुचि धीरे-धीरे कम होती जा रही है| ऐसी स्थिति में भारतीय सांस्कृतिक विरासत का संरक्षण अत्यंत आवश्यक हो गया है, ताकि आने वाली पीढ़ियाँ अपनी ऐतिहासिक और सांस्कृतिक पहचान से जुड़ी रह सकें| वैश्वीकरण के प्रभाव के कारण पाश्चात्य संस्कृति का प्रभाव भारतीय समाज पर लगातार बढ़ रहा है| आधुनिक फैशन, भाषा, संगीत तथा जीवनशैली के कारण युवा वर्ग पारम्परिक रीति-रिवाजों और सांस्कृतिक मूल्यों से दूर होता जा रहा है| परिणामस्वरूप अनेक लोककलाएँ,

लोकभाषाएँ तथा पारम्परिक कलात्मक विधाएँ धीरे-धीरे विलुप्त होने की स्थिति में पहुँच रही हैं| यदि समय रहते इनके संरक्षण के लिए उचित प्रयास नहीं किए गए, तो भारत अपनी महत्वपूर्ण सांस्कृतिक धरोहरों को खो सकता है|

भारतीय लोककलाओं और हस्तशिल्पों की स्थिति भी चिंताजनक होती जा रही है| मशीनों और आधुनिक तकनीकों के बढ़ते उपयोग के कारण पारम्परिक कलाकारों और शिल्पकारों को पर्याप्त अवसर नहीं मिल पा रहे हैं| आर्थिक असुरक्षा के कारण कई कलाकार अपने पारम्परिक व्यवसाय छोड़ने के लिए विवश हो रहे हैं| इससे अनेक प्राचीन कलाएँ समाप्त होने के कगार पर हैं| इसके अतिरिक्त पारम्परिक ज्ञान और सांस्कृतिक मूल्यों का पीढ़ी-दर-पीढ़ी हस्तांतरण भी कम होता जा रहा है| संयुक्त परिवारों के टूटने, व्यस्त जीवनशैली तथा डिजिटल संस्कृति के बढ़ते प्रभाव के कारण नई पीढ़ी अपने सांस्कृतिक इतिहास और परम्पराओं के प्रति जागरूक नहीं रह पा रही है| यह स्थिति सामाजिक और सांस्कृतिक असंतुलन को जन्म दे सकती है| अतः भारतीय कला, संस्कृति एवं परम्पराओं का संरक्षण केवल सांस्कृतिक आवश्यकता ही नहीं, बल्कि राष्ट्रीय पहचान, सामाजिक एकता और सांस्कृतिक निरंतरता को बनाए रखने के लिए भी अत्यंत महत्वपूर्ण है|

संरक्षण के उपाय

भारतीय कला, संस्कृति एवं परम्पराओं के संरक्षण के लिए समाज, सरकार, शैक्षणिक संस्थानों तथा युवा पीढ़ी के सामूहिक प्रयास आवश्यक हैं| सांस्कृतिक धरोहरों को सुरक्षित रखने के लिए केवल जागरूकता ही पर्याप्त नहीं है, बल्कि उनके संरक्षण एवं प्रचार-प्रसार हेतु व्यावहारिक कदम उठाना भी आवश्यक है| आधुनिक तकनीक और शिक्षा के माध्यम से भारतीय संस्कृति को नई पीढ़ी तक प्रभावी रूप से पहुँचाया जा सकता है|

GYAN MANTHAN
A MULITIDISCIPLINARY RESEARCH JOURNAL

(क) शिक्षा के माध्यम से संरक्षण

भारतीय संस्कृति एवं परम्पराओं के संरक्षण में शिक्षा की महत्वपूर्ण भूमिका है| विद्यालयों और विश्वविद्यालयों में भारतीय इतिहास, लोककला, शास्त्रीय संगीत, नृत्य तथा सांस्कृतिक मूल्यों से संबंधित विषयों को बढ़ावा दिया जाना चाहिए| विद्यार्थियों को सांस्कृतिक कार्यक्रमों, लोककला प्रदर्शनियों तथा पारम्परिक गतिविधियों में भाग लेने के लिए प्रेरित करना आवश्यक है| इससे नई पीढ़ी अपनी सांस्कृतिक जड़ों से जुड़ी रहेगी और उनमें सांस्कृतिक चेतना का विकास होगा|

(ख) तकनीक एवं डिजिटल माध्यमों का उपयोग

वर्तमान डिजिटल युग में तकनीक सांस्कृतिक संरक्षण का प्रभावी माध्यम बन सकती है| लोककलाओं, प्राचीन ग्रंथों, ऐतिहासिक स्मारकों तथा पारम्परिक ज्ञान का डिजिटल दस्तावेजीकरण किया जाना चाहिए| सोशल मीडिया, वेबसाइट, ऑनलाइन प्रदर्शनी तथा डिजिटल संग्रहालयों के माध्यम से भारतीय कला एवं संस्कृति को विश्व स्तर पर प्रचारित किया जा सकता है| डिजिटल प्लेटफॉर्म नई पीढ़ी को भारतीय संस्कृति से जोड़ने में महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकते हैं|

(ग) सरकारी प्रयास

भारतीय सरकार द्वारा सांस्कृतिक संरक्षण के लिए अनेक योजनाएँ और कार्यक्रम संचालित किए जा रहे हैं| संग्रहालयों, कला अकादमियों, सांस्कृतिक संस्थानों तथा ऐतिहासिक स्मारकों के संरक्षण पर विशेष ध्यान दिया जा रहा है| लोककलाकारों और शिल्पकारों को आर्थिक सहायता, प्रशिक्षण तथा प्रदर्शन के

अवसर प्रदान किए जाने चाहिए, ताकि वे अपनी कला को जीवित रख सकें| इसके अतिरिक्त ग्रामीण क्षेत्रों में सांस्कृतिक मेलों और लोककला कार्यक्रमों का आयोजन भी आवश्यक है|

(घ) समाज एवं युवा पीढ़ी की भूमिका

समाज और युवा वर्ग सांस्कृतिक संरक्षण के सबसे महत्वपूर्ण आधार हैं| परिवारों में बच्चों को पारम्परिक रीति-रिवाजों, त्योहारों और सांस्कृतिक मूल्यों के बारे में शिक्षित किया जाना चाहिए| युवाओं को भारतीय संगीत, नृत्य, साहित्य तथा लोककलाओं में रुचि लेने के लिए प्रेरित करना आवश्यक है| यदि युवा पीढ़ी अपनी संस्कृति को अपनाएगी, तो भारतीय सांस्कृतिक विरासत सुरक्षित और समृद्ध बनी रहेगी| इस प्रकार शिक्षा, तकनीक, सरकारी योजनाओं तथा सामाजिक सहभागिता के माध्यम से भारतीय कला, संस्कृति एवं परम्पराओं का प्रभावी संरक्षण किया जा सकता है|

समकालीन चुनौतियाँ एवं संभावनाएँ

वर्तमान युग में भारतीय कला, संस्कृति एवं परम्पराएँ अनेक नई चुनौतियों और संभावनाओं का सामना कर रही हैं| आधुनिकता, वैश्वीकरण तथा तकनीकी विकास ने जहाँ जीवन को सरल और आधुनिक बनाया है, वहीं दूसरी ओर पारम्परिक सांस्कृतिक मूल्यों और लोककलाओं पर इसका गहरा प्रभाव पड़ा है| बदलती जीवनशैली और उपभोक्तावादी प्रवृत्ति के कारण युवा पीढ़ी का झुकाव आधुनिक संस्कृति की ओर अधिक बढ़ रहा है, जिससे पारम्परिक कलाओं और रीति-रिवाजों के अस्तित्व पर संकट उत्पन्न हो रहा है| डिजिटल संस्कृति और सोशल मीडिया के बढ़ते प्रभाव ने सांस्कृतिक अभिव्यक्ति के स्वरूप को भी बदल दिया है| आज लोग पारम्परिक सांस्कृतिक गतिविधियों की अपेक्षा आभासी मनोरंजन को अधिक महत्व देने लगे हैं| इसके अतिरिक्त कृत्रिम बुद्धिमत्ता और आधुनिक तकनीकों के कारण सांस्कृतिक सामग्री का स्वरूप तेजी से परिवर्तित हो रहा है| यह स्थिति एक ओर सांस्कृतिक मूल्यों के क्षरण का कारण बन सकती है, तो दूसरी ओर इन्हीं तकनीकों का उपयोग संरक्षण और प्रचार के लिए भी किया जा सकता है|

GYAN MANTHAN
A MULTIDISCIPLINARY RESEARCH JOURNAL

हालाँकि इन चुनौतियों के बीच अनेक सकारात्मक संभावनाएँ भी मौजूद हैं| आज भारतीय योग, आयुर्वेद, शास्त्रीय संगीत, हस्तशिल्प तथा पारम्परिक कलाओं को वैश्विक स्तर पर नई पहचान मिल रही है| अंतरराष्ट्रीय मंचों पर भारतीय संस्कृति के प्रति बढ़ती रुचि भारत की सांस्कृतिक शक्ति को प्रदर्शित करती है| डिजिटल माध्यमों द्वारा भारतीय कला और संस्कृति को विश्वभर तक आसानी से पहुँचाया जा सकता है| युवा पीढ़ी भी यदि आधुनिकता और परम्परा के बीच संतुलन स्थापित करे, तो भारतीय सांस्कृतिक विरासत को नई ऊर्जा मिल सकती है| सांस्कृतिक जागरूकता, शिक्षा तथा तकनीक के समन्वित उपयोग से भारतीय कला, संस्कृति एवं परम्पराओं को भविष्य में और अधिक सशक्त एवं सुरक्षित बनाया जा सकता है|

निष्कर्ष

भारतीय कला, संस्कृति एवं परम्पराएँ हमारे राष्ट्र की अमूल्य धरोहर हैं, जो भारत की ऐतिहासिक पहचान, सामाजिक एकता तथा नैतिक मूल्यों को सुदृढ़ बनाती हैं| भारतीय संस्कृति ने सदैव मानवता, सहिष्णुता, प्रेम, शांति एवं सह-अस्तित्व का संदेश दिया है| देश की विविध भाषाएँ, लोककलाएँ, संगीत,

नृत्य, त्योहार तथा पारम्परिक रीति-रिवाज भारतीय समाज की सांस्कृतिक समृद्धि को प्रदर्शित करते हैं| ये केवल अतीत की स्मृतियाँ नहीं हैं, बल्कि वर्तमान और भविष्य के लिए प्रेरणा का स्रोत भी हैं| वर्तमान समय में वैश्वीकरण, आधुनिक जीवनशैली तथा पाश्चात्य संस्कृति के बढ़ते प्रभाव के कारण भारतीय सांस्कृतिक मूल्यों और परम्पराओं के समक्ष अनेक चुनौतियाँ उत्पन्न हो रही हैं| कई लोककलाएँ और पारम्परिक ज्ञान धीरे-धीरे विलुप्त होने की स्थिति में पहुँच रहे हैं| ऐसी परिस्थिति में भारतीय कला, संस्कृति एवं परम्पराओं का संरक्षण अत्यंत आवश्यक हो जाता है|

सांस्कृतिक संरक्षण के लिए सरकार, समाज, शैक्षणिक संस्थानों तथा युवा पीढ़ी की संयुक्त भागीदारी आवश्यक है| शिक्षा, तकनीक, डिजिटल माध्यम, सांस्कृतिक कार्यक्रम तथा जागरूकता अभियानों के माध्यम से भारतीय सांस्कृतिक विरासत को सुरक्षित रखा जा सकता है| विशेष रूप से युवाओं को अपनी संस्कृति और परम्पराओं से जोड़ना समय की सबसे बड़ी आवश्यकता है| अतः यह कहा जा सकता है कि भारतीय कला, संस्कृति एवं परम्पराओं का संरक्षण केवल सांस्कृतिक जिम्मेदारी नहीं, बल्कि राष्ट्र के गौरव, पहचान और भविष्य को सुरक्षित रखने का महत्वपूर्ण माध्यम है| यदि हम अपनी सांस्कृतिक धरोहरों को संरक्षित रखने में सफल होते हैं, तो आने वाली पीढ़ियाँ भी भारतीय संस्कृति की समृद्धि और महानता का अनुभव कर सकेंगी|

संदर्भ सूची

1) नेहरू, जवाहरलाल| (1946). भारत की खोज| सिग्नेट प्रेस|
2) सिंघानिया, नितिन| (2020). भारतीय कला एवं संस्कृति (चतुर्थ संस्करण)| मैकग्रा हिल एजुकेशन|
3) सेन, अमर्त्य| (2005). विवेचनात्मक भारतीय : भारतीय इतिहास, संस्कृति एवं पहचान पर लेखन| फरार, स्ट्रॉस एंड गिरॉक्स|
4) बाशम, ए. एल.| (1954). वह अद्भुत भारत| सिडगविक एंड जैक्सन|
5) कोसांबी, डी. डी.| (1965). प्राचीन भारत की संस्कृति एवं सभ्यता का ऐतिहासिक स्वरूप| रूटलेज एंड केगन पॉल|
6) राधाकृष्णन, सर्वपल्ली| (1923). भारतीय दर्शन (खंड 1)| ऑक्सफोर्ड यूनिवर्सिटी प्रेस|
7) राधाकृष्णन, सर्वपल्ली| (1927). हिन्दू जीवन दृष्टि| जॉर्ज एलेन एंड अनविन|
8) चट्टोपाध्याय, कमलादेवी| (1975). भारत की हस्तकलाएँ| इंडियन काउंसिल फॉर कल्चरल रिलेशंस|
9) मजूमदार, आर. सी.| (1975). भारत का सांस्कृतिक इतिहास| ऑक्सफोर्ड यूनिवर्सिटी प्रेस|
खिलनानी, सुनील| (1997). भारत की अवधारणा| फरार, स्ट्रॉस एंड गि

GYAN MANTHAN
A MULTIDISCIPLINARY RESEARCH JOURNAL